पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-२१ सोमवार,१२ जनवरी २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर-मुंबई से एक साथ प्रकाशित

कमाल है!

यूं तो बॉलीवुड में कई सुंदरियां ऐसी हैं जिनका फिगर देखकर लोग बस देखते ही रह जाते हैं लेकिन शिल्पा की बात ही कुछ और है। उसके जैसा स्लिम एंड ब्यूटीफुल फिगर शायद ही किसी का होगा! इसका एक कारण तो सबको पता है। बिल्कुल सही अंदाजा लगाया, योगा। लेकिन इसके अलावा भी वह बहुत कुछ करती है जिससे वह हमेशा जवान बनी रहे। उसका कहना है कि हर हाल में वह इतना पानी पीती है कि देखने वाले दंग रह जाते हैं। और हां, वह हरी पत्ती की चाय की बहुत बड़ी शौकिन है। दिन भर में अनगिनत कप चाय वह गटक जाती है। कुछ लोग पर्फेक्ट फिगर पाने के लिए जमकर स्वीमिंग करते हैं।

भाजपाई कुल में कलह

भगवा कुल में चुनाव के पहले ही कलह शुरू हो गई है. भाजपा की दिग्गज त्रिमूर्ति में से एक भैरोसिंह शेखावत ने दिल्ली में ताल ठोंकी तो राजनाथसिंह को वह रास नहीं आई तथा उन्होंने अपने अंदाज में प्रतिक्रिया देकर राजस्थान के इस शेर को खूंखार बनने पर मजबूर कर दिया. नतीजा यह हुआ की शेखावत के हमले से राजनाथ को आखिर शरणम् गच्छामी की भूमिका में अपने बयान पर न केवल सफाई देना पड़ी और जसवंतसिंह के आवास पर पहुंच कर इस बूढ़े शेर से माफी तक मांगना पड़ी. इन सबके बीच शेखावत ने विधानसभा चुनाव हारने से लेकर टिकट बेचने सहित जो मुद्दे उठाए उसने चाल, चरित्र और चेहरे का दम भरने वाले भाजपा नेतृत्व को कटघरे में खड़ा कर दिया है. भाजपा पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद दो राज्य फिर से फतह करने से उत्साहित थी और प्रधानमंत्री की कुर्सी पर उसकी निगाह जमी हुई थी, उसके पीएम इन वेटिंग की उम्मीदें और कुलांचे मार रही थी ऐसे में शेखावत का मैदान-ए-जंग में कूदना तथा सीधे राजनाथसिंह पर हमला बोलना भगवा कुल की कलह को आने वाले दिनों में और बढ़ाएगा. यह कलह बढ़ी तो निश्चित है कि राजग का कुनबा भी सुरक्षित नहीं रह पाएगा.

भाजपा द्वारा लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवारी खत्म करने के बाद पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत ने राजनाथ के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि वे चुनाव जरूर लड़ेंगे। उन्होंने अपने बयान में कहा कि वे जहां गए, वहां की जनता ने उन्हें उसी स्थान से चुनाव लड़ने के लिए कहा। इसलिए मैं चुनाव जरूर लड़ूंगा। राजनाथ के बयान पर जवाब देते हुए शेखावत ने कहा कि उन्हें राजनाथ के बोलने से कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्होंने कहा कि जब मैं राजनीति में आया था, तब राजनाथ पैदा भी नहीं हुए थे। इसके अलावा राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे पर आरोप लगाते हुए शेखावत ने कहा कि राजे ने 22 हजार करोड़ रुपए का घोटाला किया है। भाजपा के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ संबंधों पर शेखावत ने कहा कि इनके साथ उनका कोई मतभेद नहीं है। आडवाणी और वाजपेयी जी के साथ वे 1952 से साथ हैं। शेष अंतिम पेज पर....

सत्यम का झूठ, निवेशकों का दीवाला

सत्यम कम्प्यूटर सर्विसेस के संस्थापक चेयरमेन की रामलिंगा राजू द्वारा अंतरआत्मा की आवाज सुनने और अपने पाप को स्वीकार करने के बाद न केवल कार्पोरेट जगत बल्कि सरकार के भी कई हिस्सों में भूचाल आ गया है. हर्षद मेहता के बाद सत्यम का यह सबसे बड़ा कार्पोरेट घोटाला है. इसमें सत्यम कम्प्यूटर के प्रबंधन के अलावा, केन्द्र और राज्य सरकार, सेबी, आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो सहित वे सारी एजेंसियां भी कम दोषी नहीं है. जिन पर ऐसे घोटाले रोकने और कंपनियों की कार्यप्रणाली पर निगाह रखने का जिम्मा था. क्या राजू की स्वीकारोक्ति के पहले इन तमाम एजेंसियों का जिम्मा नहीं था कि वे इस घोटाले को उजागर करते इसकी तरह तक पहुंचते. और यदि उन्होंने अपनी इस जिम्मेदारी को पूरा नहीं किया तो इन्हें गैर जिम्मेदार होने का क्या दंड दिया जाएगा. घोटाला उजागर होने के बाद सत्यम का शेयर औंधे मुंह गिर गया है और उसके निवेशक एक लुटे हुए कारोबारी की तरह सड़क पर खड़े हैं. कंपनी और उसका ऑडिट करने वाली ऑडिटर टीम सहित सरकार की ओर से सफाई देना शुरू हो चुका है लेकिन क्या भविष्य में निवेशकों के साथ फिर ऐसी धोखाधड़ी नहीं होगी इसके पुख्ता इंतजाम हो पायेंगे? शेष अंतिम पेज पर....

शुभ दिन, शुभ संकल्प

उत्तम झंवर

हर्षद, चेतन और अब राजू। हर बार एक बड़ा नुकसान होने के बाद हम चेतते हैं कि आखिर ये क्या हुआ?,कैसे हुआ? क्यूं हुआ, ये तो हम सभी जानते ही हैं। ६६ देशों से जुड़ी कंपनी सत्यम के ऑडिट सिस्टम को लेकर विश्व भर में चर्चाएं हुई। एकाएक मीडिया राजू और सत्यम के इतिहास से भर गया। तब कहीं जाकर सरकार ने फिर पियर रिव्यू का नियम बनाया। ऑडिटर्स के ऑडिट का नियम हालांकि पहले से ही बने थे लेकिन सख्ती से पालन करने का नियम अभी बना है।

मंदी की मार, ट्रकों के चक्के जाम, पैट्रोल की कमी और राजू का त्रास। ठंड की हलकी फुहारों को इन सभी ने कम तो किया ही। फिर भी बाजार फिर से उठने में लगा है। कही शॉपिंग मेले तो कही डिस्काउंट ऑफर लोगों को रिझाने की कोशिश में लगे हैं। कोशिश जारी है उबरने की। लोन दरों के सस्ते होने से घर का सपना सच होने की स्थिति में आता जा रहा है। ईएमआई सस्ती होने के साथ प्रॉपर्टी के रेट्स पहले की अपेक्षा कम हुए हैं। पर बात यहां उन लोगों की भी है जो गांवो में रहते हैं और बीस रूपए दिहाड़ी पर भी काम करते हैं। उन लोगों के लिए मंदी पहले भी थी, मंदी आज भी है। इस स्तर पर काम करने के लिए सरकार सोच ही नही रही है। कार्पोरेट्स कंपनियों का सपना लेकर चलने वाले यूथ की सोच में तो गांव शामिल ही नहीं हैं। स्वामी विवेकानंद ने इन युवाओं से ही समाज में क्रांति लाने की अपेक्षा की थी। वे स्थितियां अब तक निर्मित नहीं हो पाई हैं। १४६ वी जयंति पर स्वामी विवेकानंद के समक्ष सत्यम के असत्य से जूझता युवा खड़ा है।

इस मकर संक्रांति पर संकट चर्तुदशी भी है। सफलता के योग भरपूर हैं। इस शुभ दिन शुभ संकल्प लेकर उसे पूरा करने के लिए जुट जाएं तो भविष्य उज्जवल हो सकेगा।

सत्यम का झूठ, निवेशकों का दीवाला

पहले पेज से जारी...

जिस दिन सत्यम कंप्यूटर्स के संस्थापक और चेयरमैन रामालिंगा राजू ने सभी स्टॉक एक्सचेंज को एक खत के जरिए यह बताया कि उनकी कंपनी पिछले सात साल से निवेशकों को गलत जानकारियां दे रही थी, उस दिन बैकुंठी एकादशी थी। दक्षिण भारत में मान्यता है कि इस दिन अपने पाप स्वीकारने से भगवान विष्णु क्षमा कर देते हैं। तो क्या राजू को अपने निवेशकों को गुमराह करने के अपराध से माफ कर दिया जाना चाहिए? या फिर उन्हें इसलिए माफ कर दिया जाना चाहिए कि उन्होंने अपनी गलतियों को स्वीकार कर लिया है? लेकिन यह इतना आसान मामला नहीं है। इस घोटाले के पर्दाफाश से हिंदुस्तान को शर्मसार होना पड़ा है। कल जो हिंदुस्थानी दुनिया में उद्यमशीलता के लिए जाने जाते थे अब जालसाजी के लिए भी पहचाने जाने लगे हैं। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि आर्थिक चोट कितनी गहरी है इसलिए इसका इलाज कैसे होगा यह कहना जल्दबाजी होगी लेकिन इसमें लगा पैसा जनता का है। सत्यम जैसा खेल और भी कोई कारपोरेट कंपनी कर तो नहीं रही है इसकी जांच तत्काल शुरू हो जानी चाहिए। असत्य के शेर का ग्रास बने सत्यम की कलंक कथा की देशवासियों ने अभी सिर्फ झांकी देखी है पूरी कहानी सामने आनी अभी बाकी है। 1992 में हर्षद मेहता कांड से जुड़े बैंक प्रतिभूति और शेयर बाजार घोटाले ने देश की शेयर संस्कृति को क्षति पहुंचाई थी। उसी तरह सत्यम का यह घोटाला भी देश में स्टॉक आधारित कारपोरेट संस्कृति को भारी नुकसान पहुंचा सकता है। सत्यम का आर्थिक घोटाला सिर्फ चौंकानेवाला नहीं बल्कि निवेशकों को सदमा देनेवाला है। जरा सोचिए जिस निवेशक ने सिर्फ एक दिन पहले एक लाख रुपए का सत्यम का शेयर खरीदा था आज उसका मूल्य 30 हजार रुपए हो गया है। जिस तरह आईटी सेक्टर के विकास में सत्यम कंप्यूटर्स के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है उसी तरह उसके इस घोटाले को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। दुनिया की 500 सबसे बड़ी फोर्ब्स कंपनियों में से 185 कंपनियां इसकी सॉफ्टवेयर सेवाओं की ग्राहक हैं। इसके कर्मचारियों की संख्या 53 हजार है तो विश्व बैंक तक इसके ग्राहकों की सूची में शामिल हैं। सत्यम ने दुनिया भर में वैसे ही लोगों का विश्वास प्राप्त कर लिया था फिर ऐसे में यह सवाल उठता है कि बैलेंस शीट में कंपनी की परिसंपत्तियों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करके शेयर बाजार मे निवेशकों का विश्वास हासिल करने को राजू की जरूरत क्यों पड़ी? दस साल से एक कंपनी निवेशकों के साथ ही सेबी को भी गुमराह कर रही थी और सब कुछ बेरोकटोक चल रहा था। जिस कंपनी का हिस्सा बनते हुए कर्मियों को गर्व महसूस होता था, जिसके शेयर लेकर शेयर धारक अपने निवेश के प्रति बेखौफ हो जाते थे उस कंपनी ने ऐसा क्यों किया? इन सवालों का जवाब आज हर शेयर बाजार का हर निवेशक चाहता है। क्या सरकार के पास उनके इन सवालों का कोई जवाब है?

सत्यम कंप्यूटर्स के संकट की भनक पिछले एक माह से ही देश और दुनिया को लगने लगी थी। मंदी के शोर में सत्यम की मजबूत बैलेंस शीट के कारण यह संकट सदमा देनेवाला होगा? ऐसा किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था। अपने ही परिवार की दो अन्य कंपनियों को राजू सत्यम कंप्यूटर्स के अधीन करना चाहते थे। उन कंपनियों के विलय का उनके निदेशक विरोध कर रहे थे। विरोध के चलते एक निदेशक ने अपने पद से इस्तीफा भी दे दिया था। इतना ही नहीं सत्यम का विश्वबैंक के साथ भी विवाद हुआ था। विश्वबैंक की ओर से सत्यम को जो भुगतान किया जा रहा था, उसे जायज ठहराने के लिए सत्यम के पास पर्याप्त दस्तावेज नहीं थे। बैंक ने जांच में यह भी पाया कि सत्यम ने बैंक के कुछ अधिकारियों को रिश्वत देकर भुगतान प्राप्त कर लिए। इसलिए विश्व बैंक ने भी सत्यम को आठ साल के लिए काली सूची में डाल दिया था। संकेत के बाद भी संकट नहीं समझनेवाले निवेशक आज सदमे में हैं। अब उन्हें कौन समझाए कि गलत आंकड़ों का जाल ऐसा ही होता है। इसे बुननेवाला खुद भी एक दिन इसी जाल में फंस जाता है। राजू के साथ भी ऐसा ही हुआ, वह एक शेर की सवारी कर रहे थे , जो दस साल के बाद बेलगाम हो गया और उससे उतरने का मतलब था उसी शेर का ग्रास बनना।

भाजपाई कुल में.....

पहले पेज से जारी...

अपने चुनाव लड़ने पर स्पष्टीकरण देते हुए शेखावत ने कहा कि "गांवों की स्थिति अब भी बदतर है। वहां अभी भी सुवधियाएं मुहैया नहीं कराई गई हैं। मैं उन गांवों को विकास करना चाहता हूं। दिन-प्रतिदिन गांवों से शहरों की तरफ लोगों का पलायन एक चिंतनीय विषय है। इस पर विचार किया जाना आवश्यक है।" गौरतलब है कि पूर्व उपराष्ट्रपति शेखावत ने भाजपा से लोकसभा चुनाव लड़ने की इच्छा जताई थी। उनकी इच्छा को भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने नकार दिया था और कहा था कि भाजपा उन्हें चुनाव लड़ने की इजाजत नहीं दे सकती। इसके बाद बागी तेवर अपनाते हुए शेखावत ने कहा था कि वे चुनाव जरूर लड़ेंगे। यह जरूरी नहीं कि वे भाजपा से ही चुनाव लड़ें।

तोमर राज्यसभा के लिए भाजपा प्रत्याशी

भोपाल । मध्यप्रदेश में रिक्त राज्यसभा की एक मात्र सीट के लिए प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर भाजपा के उम्मीदवार होंगे। प्रदेश चुनाव समिति ने श्री तोमर के नाम को मंजूरी दे दी है। उनका निर्विरोध निर्वाचित होना तय है। कांग्रेस ने राज्यसभा के लिए प्रत्याशी नहीं उतारने की घोषणा पहले ही कर चुके हैं।भारतीय जनता पार्टी प्रदेश चुनाव समिति की आज यहां बैठक हुई जिसमें श्री तोमर का नाम सर्वसमिति से तय किया गया। प्रदेश चुनाव समिति ने हाईकमान को श्री तोमर का नाम प्रत्याशी घोषित करने के लिए भेज दिया है। औपचारिक घोषणा दिल्ली से ही होना है, लेकिन यहां प्रदेश समिति ने उनके नाम की घोषणा कर दी है। प्रदेश भाजपा कार्यालय में हुई बैठक में चुनाव समिति के अधिकांश सदस्य उपस्थित थे। सुमित्रा महाजन एवं कृष्ण मुरारी मोघे की अनुपस्थिति में हुई बैठक में तोमर एवं अनिल माधव दवे के नामों पर ही विस्तार से चर्चा हुई। अंत में श्री तोमर के नाम पर मुहर लगा दी गई। यह सीट लक्ष्मीनारायण शर्मा के निधन के कारण रिक्त हुई थी। उनका कार्यकाल डेढ़ साल ही बचा था। डेढ़ साल बाद इस सीट पर पुनः चुनाव होंगे।

झारखंड और पश्चिम बंगाल के उपचुनाव का संदेश

पार्टियां, नेता और अन्य संस्थाएं लाख दावा करें पर लोकतंत्र के रंगकर्म की असली निर्देशक तो जनता ही होती है। वह किसी भी नायक को मंच से उतार सकती है और किसी सामान्य व्यक्ति को नायक बना सकती है। यह बात पहले झारखंड के तमाड़ और फिर पश्चिम बंगाल के नंदीग्राम उपचुनावों में जनता ने बता दी है। आप का एजेंडा चाहे मार्क्सवाद हो या आदिवासी कल्याण, अगर वह भ्रष्ट हो जाता है तो लाख छुपाए जाने के बावजूद जनता सच देख लेती है और इसीलिए इन दो चुनावों में जनता ने जहां एक मुख्यमंत्री को हरा कर सामान्य अपराधी को जिता दिया, वहीं तीस साल से सत्ता पर काबिज वाममोर्चा की सीट छीन कर तृणमूल कांग्रेस की एक सामान्य महिला को दे दी। कभी आदिवासियों के बड़े नेता रहे शिबू सोरेन ने अपने को अपराध और

भ्रष्टाचार से इतना जोड़ लिया कि राज्य की जनता आज उनकी पार्टी को पांच सासंद और 17 विधायक देकर भी उन्हें सत्ता नहीं सौंपना चाहती। वरना तमाड़ से ही दो बार चुनाव हार चुके और कई आपराधिक मामलों में फंसे एक अनजान पार्टी के गोपाल कृष्ण पीटर जैसे युवा उम्मीदवार उन्हें कैसे हरा सकते थे। यह बात सही है कि 'गुरु जी' को हराने में यूपीए के ही साथ रहे एनोस एक्का की झारखंड पार्टी का भी हाथ है और इस लिहाज से यह सत्तारूढ़ गठबंधन के आपसी अंतर्विरोध का भी नतीजा है। पर चिरुडीह हत्याकांड से लेकर अपने सचिव की हत्या में संदिग्ध रहे शिबू के सत्तामोह को न राष्ट्रीय स्तर पर क्षम्य माना जा रहा है, न ही स्थानीय स्तर पर। दूसरी तरफ नंदीग्राम सीट पर तृणमूल कांग्रेस की फिरोजा बीवी की विजय शिबू सोरेन की हार की तरह अप्रत्याशित भले नहीं थी पर यह राज्य की अखंड सत्ता के दंभ में रह रहे वाममोर्चा के लिए एक कड़ी चेतावनी जरूर है। वह सीट भाकपा के विधायक मोहम्मद इलियास के एक स्टिंग ऑपरेशन में रिश्वत के आरोप में पकड़े जाने के बाद खाली हुई थी। वहां सलेम समूह को जमीन देने के नाम पर सरकार ही नहीं कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं ने भी जनता का दमन किया था। इसी में फिरोजा बीवी का बेटा मारा गया था और लोगों ने शहीद की मां के रूप में मशहूर हुई उस महिला को 39551 वोटों से जितवाया। जनता की जीत के रूप में दर्ज किए जाने लायक इन दो उपचुनावों के परिणाम मार्क्सवादी और आदिवासी दलों के भीतर गंभीर मंथन की मांग करते है

शेखावत को शेख बनाने की कवायद

विशेष टिप्पणी

सुरेन्द्र बंसल

भैंरोसिंह शेखावत को जब उपराष्ट्रपति पद के लिए एनडीए ने नामांकित किया तब यह मान लिया गया था कि उनकी सक्रिय राजनीति की पारी समाप्त हो गई है. वे उपराष्ट्रपति चुन भी लिए गए और उसे पांच साल निभा भी गए. संवैधानिक पद पर रह चुके व्यक्ति के लिए मान लिया जाता है कि वह राजनैतिक तौर पर रिटायर हो चुका है. भाजपा के भीतर भैंरोसिंह शेखावत की निवृत्ति हो चुकी थी और उन्हें पार्टी के भीतर ही किसी तरह सक्रिय और कार्यशील नहीं माना जा रहा था. लेकिन राजस्थान चुनाव में वसुंधराराजे सिंधिया के नेतृत्व में भाजपा की हार एक बहाना बन कर खड़ी हो गई. वसुंधराराजे पर २२ हजार करोड़ रुपए के भ्रष्टाचार का आरोप कांग्रेस ने लगाया था. अब कांग्रेस वहां सत्ता में है पर इस मामले को राजस्थान के कद्दावर भाजपा नेता भैंरोसिंह शेखावत हवा देकर भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व को चुनौती दे रहे हैं.

शेखावत कभी शेखी नहीं बघारते वे राजनीति में संयोजन-नियोजन वाले जाने-माने नेता है. राजनीति के खेल को पांसो से खेलने में शेखावत बहुत माहिर है. जब कभी नंबर का गेम होता है तो भाजपा के भीतर शेखावत को एक माहिर खिलाड़ी की जिम्मेदारी सौंपी जाती रही है. इस बार फिर जब भैंरोसिंह शेखावत राजस्थान में गरज रहे हैं तो इसके भी बहुत से मायने हैं और बहुत से ऐसे जोड़ हैं जिसके गणित में शेखावत एकाएक फलित हुए हैं.

दरअसल वसुंधरा राजे से जो मनमुटाव शुरू हुआ और वसुंधरा से जो त्रस्त हुआ वह तो एक गरम मामला बना ही लेकिन जो भाजपा के केन्द्र में लालकृष्ण आडवाणी पर सहमत नहीं है उनके लिए भैंरोसिंह शेखावत ही एक ऐसा नाम हो सकता था जो लालकृष्ण आडवाणी को ललकार सके. अपने को लोकसभा चुनाव के लिए उपयुक्त उम्मीदवार घोषित करना शेखावत की पहली चेतावनी है, जो यह दर्शाती है कि कोई प्रधानमंत्री पद के लिए सिर्फ अपने को एकमात्र दावेदार न समझें और न ही घोषित तथा प्रचारित करें. इस आशय को उन्होंने यह कहकर साफ किया है कि भाजपा में कभी किसी को प्रधानमंत्री घोषित करने की परिपाटी नहीं रही है.

लेकिन शेखावत के साथ सिर्फ वसुंधाराजे विरोधी नेता ही नहीं है उनके साथ भाजपा के भीतर के, वे सब नेता भी हो सकते है जो लालकृष्ण आडवाणी को प्रधानमंत्री के रूप में नहीं चाहते पर उनका कद उतना नहीं बढ़ा कि वे आडवाणी को चुनौती दे सके. इसलिए वरिष्ठता में सबसे आगे शेखावत को नींद से जगा लिया गया. पर कहानी भाजपा के भीतर तक ही सीमित नहीं है. यह आग एनडीए के भी भीतर से सुलगाकर भाजपा में भेजी गई है. जाहिर है एनडीए के बहुत से घटक यह नहीं चाहते कि कट्टरपंथी लालकृष्ण आडवाणी प्रधानमंत्री के सर्वसम्मत दावेदार बने. लेकिन कोई एनडीए में इस आवाज को उठाता तो एनडीए में चुनाव के ऐन मौके पर फूट पड़ जाती है. जैसी खबर है कि पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चन्द्रशेखर के समर्थक नेता ओर कुछ अन्य मिलकर इस मामले को उठा रहे हैं तो इसमें कोई ताज्जुब नहीं है. आडवाणी के नेतृत्व में एनडीए के कुछ दलों को सिद्धांतः कुछ तकलीफ हो सकती है. इसलिए यही वक्त था जब इसे भाजपा के भीतर से शुरू किया जाता. शेखावत की ललकार इसी की उपज है और इसलिए यह शेखावत को शेख बनाकर आडवाणी को अलग-थलग करने की कवायद है.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८